दुआए अस-सीमात

शेख तुसी, सैयद इब्न तावूस और कफामी के अनुसार, मोहम्मद इब्न उस्मान उमरी (जो इमाम ज़माना के विश्वसनीय और प्रतिनिधि है) कहते हैं की यह दुआ इमाम मुहम्मद बिन अली अल बाकिर (अ:स)और इमाम जाफर बिन मोहम्मद अल सादिक (अ:स) के स्वरा बताई गयी है! अल्लामा मजलिसी के अनुसार सभी पवित्र धार्मिक विद्वान् इस दुआ को पढ़ते थे! शेख कफामी के अनुसार इस दुआ में "इस्मे आज़म" (अल्लाह के महान नाम) शामिल है! इमाम मोहम्मद अल बाक़िर (अ:स) ने अपने वफादारों को इस दुआ के पढ़ने की सलाह इसलिए दिया था के इसके पढ़ने से अह्लाबैत (अ:स) के दुश्मनों का पतन होता है! इमाम जाफर बिन मोहम्मद अल सादिक (अ:स) ने बताया की अल्लाह (अजल्लाल लाहो ता-आला फर्जुहू) ने अपने नबी मूसा (अ:स) को अपने दुश्मनों पे काबू पाने के लिए यह दुआ सिखाई थी! इस दुआ को विशेषकर शुक्रवार सूर्यास्त के ठीक पहले पढ़ने की ज़्यादा अहमियत है!

बीस-मिल-लाहिर-रहमानिर-रहीम

अल्लाहुम्मा इन-नी अस अलुका बीस-मिकल-अज'इमिल-आ-ज़'अमिल-आ'ज़-जिल अल लील
अक-रमी
अल-लज़'ई इज़'आ दुए'एता बिही अ'ला मगालिकी अब-वाबिस-समा-लिलिल-फत-ह'इ बीर'रह' मतीन फतह'अत
व इज़'आ दुए'एता बिही अ'ला मज"आया-इकी अब- वाबिल-अर्ज़"इ लील-फराजिन-फराजत
व इज़'आ दुए'एता बिही अ'लाल -उ'स-री लील-युस-री त्यास-सरत
व इज़'आ दुए'एता बिही अ'लाल -अम-वाती लीं नुशूरिन-तशारत
व इज़'आ दुए'एता बिही अ'ला कश –फिल-बा-सा-इ वाज़"-ज़"अर-रा-इन-कशाफत
व बिजलाली वज-हिकल-करीम
अक-राम-वूजोधी व आ'ज़-जिल-वुजूह
अल-लज़'ई अ'नत लाहुल-वुजूह
व खज़"आत लहर-रिकाब
व खाशा'त लाहुल-अस'-वात
व वाजिलत लाहुल-कुलूबू मीम-मखाफतिक
व बी-कुद-वातिकल-लती बिहा
तुम-सिकुस-समा-अ अन तक़ा' अ'लाल-अर्ज़"इ इल-ला बिद'निक
व तुम-सिकुस-समाती वल-अर-ज़"अ अन ताज़ूला
व बी-मशेई-अतिकाल-लती जाल-लहाल-अ'अलामून
व बी-कलिमतिकल-लती खलक-ता बिहास-समावाती वल-अर्ज़"
व बी-कलिमतिकल-लती स'आना'-ता बिहाल-अ'जा-इब
व खलक-ता बिहाज़' ज़'उल-माता व जा'ल-तहा लैलन
व जा'ल-ताल-लायला सकना
व खलक-ता बिहान-नूर व जा'ल-तहु नाहरा
व जा'ल तन -नहार नुशूराम-मुब-स'इरा
व खलक-ता बिहाल क़मरा व जा'ल-ताल-क़मरा नूरा
व खलक-ता बिहाल क़मरा व जा'ल-तश-शाम-सा ज़"इ-या-अ
व खलक-ता बिहाल-क़मरा व जा'ल-ताल-क़मरा नूरा
व खलक-ता बिहाल-कवाकिबा व जा'ल तहा नुजूमाव-व बुरुजाव-व मास'आबीह'अ व जीनातौ-व रुजूमा
व जा'ल-ता लहा मशारिक़ा का मगारिब

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ الْعَظِيْمِ الْاَعْظَمِ الْاَعَزِّ
الْاَجَلِّ الْاَكْرَمِ الَّذِیْ اِذَا دُعِيْتَ بِهٖ عَلٰى مَغَالِقِ
اَبْوَابِ السَّمَآءِ لِلْفَتْحِ بِالرَّحْمَةِ انْفَتَحَتْ وَ اِذَا
دُعِيْتَ بِهٖ عَلٰى مَضَآئِقِ اَبْوَابِ الْاَرْضِ لِلْفَرَجِ
انْفَرَجَتْ وَ اِذَا دُعِيْتَ بِهٖ عَلَى الْعُسْرِ لِلْيُسْرِ
تَيَسَّرَتْ وَ اِذَا دُعِيْتَ بِهٖ عَلَى الْاَمْوَاتِ لِلنُّشُوْرِ
انْتَشَرَتْ وَ اِذَا دُعِيْتَ بِهٖ عَلٰى كَشْفِ الْبَاْسَآءِ وَ
الضَّرَّآءِ انْكَشَفَتْ وَ بِجَلَالِ وَجْهِكَ الْكَرِيْمِ اَكْرَمِ
الْوُجُوْهِ وَ اَعَزِّ الْوُجُوْهِ الَّذِیْ عَنَتْ لَهُ الْوُجُوْهُ وَ
خَضَعَتْ لَهُ الرِّقَابُ وَخَشَعَتْ لَهُ الْاَصْوَاتُ وَ
وَجِلَتْ لَهُ الْقُلُوْبُ مِنْ مَخَافَتِكَ وَ بِقُوَّتِكَ الَّتِیْ
بِهَا تُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا
بِاِذْنِكَ وَ تُمْسِكُ السَّمٰوَاتِ وَ الْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا وَ
بِمَشِيَّتِكَ الَّتِیْ دَانَ لَهَا الْعَالَمُوْنَ وَ بِكَلِمَتِكَ الَّتِیْ
خَلَقْتَ بِهَا السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَ بِحِكْمَتِكَ الَّتِیْ
صَنَعْتَ بِهَا الْعَجَآئِبَ وَ خَلَقْتَ بِهَا الظُّلْمَةَ وَ
جَعَلْتَهَا لَيْلًا وَّجَعَلْتَ اللَّيْلَ سَكَنًا وَّ خَلَقْتَ بِهَا
النُّوْرَ وَ جَعَلْتَهٗ نَهَارًا وَّ جَعَلْتَ النَّهَارَ نُشُوْرًا مُبْصِرًا

WWW.IslamInHindi.org

व जा'ल-ता लहा मत'आलिया व मजारी
व जा'ल-ता लहा फलकाव-व मसाबिः'
व क़द-दर-तहा फ़ीस-समा-इ मनाज़िला फाह'संता तक-दी-रहा
व स'अव-वर-तहा फ'अह'-सन्ता तस'-वी-रहा
व अह' स'अय्ताहा बी-अस-मा-इक इह'स'आआ-आ
व दब-बर-तहा बी ह'इक-मतिका तद-बीराव-व अह'-सन-ता तद-बीरहा
व साख-हर-तहा बी-सुल-त'आनिल-लेली व सुल-तान-नहारी वस-सा'अति व अ'दादीस सिनीना वल-ह'साब
व जा'ल-ता रु-य़ाटाःआळीज्नी'न-नासी मर-आव-वाह'इजा
व-अस-अलुकल्लाहुम्मा बिमाज-दिका
अल-लज़'ई कल-लम-ता बिही अ'अब-दका व रसूलाका मूसब-न इ'मराना अलैहिस सलामु फिल-मुव द-दसीन
फौक़ा इह-सासिल करूबी-ईन
फौक़ा गामा-इमिन-नूर
फौक़ा ताबूतिश-शहादाह
फी अ'मूदीन-नारी व फी त'उरी सेना-अ
व फी जबाली ह'ऊरीथा फिल-व अदील-मुक़द-दासी फिल-बुक-अ'तिल- मुबाराकती मिन जानिबित'-तूरिल-ईमानी मिनाश-शाजारह
व फी अर्ज़"इ मिस'रा बी-तिस-इ'आआआ-यातिम बी-यिनात
व यू-मा फरक-ता लिबनी इस-रा-ईलाल-बह'र
व फिल-मुम-बजिसातिल-लती स'आना'-ता बिहाल- अ'जा-इबा फी बह'-री सूफ
व अ'क़द-ता मा-अल-बह'री फी क़ल-बिल-ग़म-री कल-ह'इजारती
व जावाज्ता बी-बनी इस-रा-ईलाल-बह'रा व
तम्मत कलिमतुकल- हुस-ना अ'लाय्हीम बीमा
स'आबरू व अव-रथ-ताहम-मशारिकाल-अर-
ज़"इ व मागा रिबहाल-लती बारक-ता फीहा लील-अ'अलामीन
व अग़-रक-ता फ़िर-अ'वना व जुनूदहू व मराकिबहू फिल-यौम
व बीस-मिकल-अ'जीमिल-आ'ज़'अमिल-आ'जिल-अजल-लील-अक-रम
व बिमाज-दिकल-लज़'ई तजल-लैता बिही
ली-मूसा कलेमिका अलैहिस-सलामु फी तूरी से-ना-अ
व ली-इब्राहीम अलैहिस-सलामु खालीका मिन कब-लू फी मस-

وَّ خَلَقْتَ بِهَا الشَّمْسَ وَ جَعَلْتَ الشَّمْسَ ضِيَآءً وَّ
خَلَقْتَ بِهَا الْقَمَرَ وَ جَعَلْتَ الْقَمَرَ نُوْرًا وَّ خَلَقْتَ
بِهَا الْكَوَاكِبَ وَ جَعَلْتَهَا نُجُوْمًا وَّ بُرُوْجًا وَّ
مَصَابِيْحَ وَ زِيْنَةً وَّ رُجُوْمًا وَّ جَعَلْتَ لَهَا مَشَارِقَ وَ
مَغَارِبَ وَ جَعَلْتَ لَهَا مَطَالِعَ وَ مَجَارِىَ وَ جَعَلْتَ
لَهَا فَلَكًا وَّ مَسَابِحَ وَ قَدَّرْتَهَا فِى السَّمَآءِ مَنَازِلَ
فَاَحْسَنْتَ تَقْدِيْرَهَا وَ صَوَّرْتَهَا فَاَحْسَنْتَ تَصْوِيْرَهَا
وَ اَحْصَيْتَهَا بِاَسْمَآئِكَ اِحْصَآءً وَّ دَبَّرْتَهَا
بِحِكْمَتِكَ تَدْبِيْرًا وَّ اَحْسَنْتَ تَدْبِيْرَهَا وَ سَخَّرْتَهَا
بِسُلْطَانِ اللَّيْلِ وَ سُلْطَانِ النَّهَارِ وَ السَّاعَاتِ وَ
عَدَدِ السِّنِيْنَ وَ الْحِسَابِ وَ جَعَلْتَ رُؤْيَتَهَا
لِجَمِيْعِ النَّاسِ مَرْئًى وَّاحِدًا وَّ اَسْأَلُكَ اللّٰهُمَّ
بِمَجْدِكَ الَّذِىْ كَلَّمْتَ بِهٖ عَبْدَكَ وَ رَسُوْلَكَ
مُوْسَى ابْنَ عِمْرَانَ عَلَيْهِ السَّلَامُ فِى الْمُقَدَّسِيْنَ
فَوْقَ اِحْسَاسِ الْكَرُوْبِيْنَ فَوْقَ غَمَآئِمِ النُّوْرِ فَوْقَ
تَابُوْتِ الشَّهَادَةِ فِىْ عَمُوْدِ النَّارِ وَ فِىْ طُوْرِ سَيْنَآءَ
وَ فِىْ جَبَلِ حُوْرِيْثَ فِى الْوَادِ الْمُقَدَّسِ فِى الْبُقْعَةِ
الْمُبَارَكَةِ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ مِنَ الشَّجَرَةِ وَ

WWW.IslamInHindi.org

जिदिल-खीफ
व ली-इस्हाका स'अफ़ी-यिका अलैहिस-सलामु फी बी-री शीई'न
व ली-या'कूबा नबी-यिका अलैहिस-सलामु फी बयती ईल
व औ-फैता ली-इब्राहीमा अलैहिस-सलामु बी-मीसाकिक
व ली इस्हाका - बिह'इल-फिक
व ली-याकूबा बिशाहदातिक
व लील -मु-मिनीना बीवा'-दिका
व लीद-दए'ऐना बी-अस-मा-इक फजाब-त
व बी-मज-दिकल-लज़'ई ज़'अहारा ली-मूसा इब्नी इ'म-राना अ'लाय्हिस-सलामु अ'ला कूब-बतिर-रुम्मान
व बिआया-यातिकल-लती व काट अ'ला अर-ज़"इ मिस-रा बी-मज-दी ल-इ'ज़-जाती व ल-गलाबती
बिआया-यातिन अ'जीजाह
व बी-सुल-त'आनिल-कू-व ह
व बी-इ'ज़-जातील-कुद-रह
व बी-श-नील-कलिमतित-ता-ममः
व बी-कल्मातिकल-लती ताफाज़"-ज़"अल-ता बिहा अ'ला अह्लिस-समा व अति व ल-अर-ज़"इ व अह्लिद-दूँ-या व अह-लील-आ-खिरह
व बी-रह'-मतिकल-लती मनन-ता बिहा अ'ला जमीई' खल-किक
व बीस –तित'आआआ'टिकल-लती अकाम-ता बिहा अ'लाल-अ'अलामीन
व बी-नूरिकल-लज़'ई क़द खर-रा मिन फज़ी'ही थूरू सेना-अ
व बी-इ'ल-मिका व जलालिका व किब-री- या-इक व इ'ज़-जातिक
व जबरूतिकल-लती लम तस-तकिल-लाहाल-अरज"
व न-खाफाज़"अत लहास-समा व अत
व न्ज़जारा लहाल-ऽ'म-कुल-अक-बर
व रकदत लहाल-बिह'आरू व ल-अन-हार
व खज़"आत लहाल-जिबा;
व सकनात लहाल-अर-ज़"ऽ बी-मनाकिबिहा
व स-तस-लमत लहाल-खाला-इकु कुल-लूहा
व खाफकात लहार-रियाह'ऽ फी जरयानिहा
व खामादत लहान-नीरानु फी औ-तानिहा
वू बिसुल-त'आनिकल-लज़'ई ऽ'रिफत लाका बिहाल-गलाबतु ज़ह-रद-दुहूरी व ह'ऽमीद-ता

فِيْ اَرْضِ مِصْرِ بِتِسْعِ اٰيَاتٍ بَيِّنَاتٍ وَ يَوْمَ فَرَقْتَ
لِبَنِيْ اِسْرَآئِيْلَ الْبَحْرَ وَ فِيْ الْمُنْجَبِسَاتِ الَّتِيْ
صَنَعْتَ بِهَا الْعَجَائِبَ فِيْ بَحْرِ سُوْفٍ وَ عَقَدْتَ
مَآءَ الْبَحْرِ فِيْ قَلْبِ الْغَمْرِ كَالْحِجَارَةِ وَ جَاوَزْتَ
بِبَنِيْ اِسْرَآئِيْلَ الْبَحْرَ وَ تَمَّتْ كَلِمَتُكَ الْحُسْنٰى
عَلَيْهِمْ بِمَا صَبَرُوْا وَ اَوْرَثْتَهُمْ مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَ
مَغَارِبَهَا الَّتِيْ بَارَكْتَ فِيْهَا لِلْعَالَمِيْنَ وَ اَغْرَقْتَ
فِرْعَوْنَ وَ جُنُوْدَهٗ وَ مَرَاكِبَهٗ فِي الْيَمِّ وَ بِاسْمِكَ
الْعَظِيْمِ الْاَعْظَمِ الْاَعَزِّ الْاَجَلِّ الْاَكْرَمِ وَ بِمَجْدِكَ
الَّذِيْ تَجَلَّيْتَ بِهٖ لِمُوْسٰى كَلِيْمِكَ عَلَيْهِ السَّلَامُ
فِيْ طُوْرِ سَيْنَآءَ وَ لِاِبْرَاهِيْمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ خَلِيْلِكَ
مِنْ قَبْلُ فِيْ مَسْجِدِ الْخَيْفِ وَ لِاِسْحَاقَ صَفِيِّكَ
عَلَيْهِ السَّلَامُ فِيْ بِئْرِ شِيْعٍ وَ لِيَعْقُوْبَ نَبِيِّكَ عَلَيْهِ
السَّلَامُ فِيْ بَيْتِ اِيْلٍ وَ اَوْفَيْتَ لِاِبْرَاهِيْمَ عَلَيْهِ
السَّلَامُ بِمِيْثَاقِكَ وَ لِاِسْحَاقَ بِحَلْفِكَ وَ لِيَعْقُوْبَ
بِشَهَادَتِكَ وَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ بِوَعْدِكَ وَ لِلدَّاعِيْنَ
بِاَسْمَآئِكَ فَاَجَبْتَ وَ بِمَجْدِكَ الَّذِيْ ظَهَرَ لِمُوْسَى
ابْنِ عِمْرَانَ عَلَيْهِ السَّلَامُ عَلٰى قُبَّةِ الرُّمَّانِ وَ بِاٰيَاتِكَ

WWW.IslamInHindi.org

बिही फ़ीस समा व अति व ल-अरज"इन
व बिकलिमतिका कलिमतिस'स'ईद-कील-लती सबक़त ली-
अबीना आआआ-दम अ'लाय्हिस-सलामु व द'उर-
री यातिहू बीर-रह'-मह व अस-अलुका बी-कलिमतिकल-लती
गलबत कुल-ला शै
व बी-नूरी व ज-हिकल-लज़'ई तजल-लेता बिही लील-जबाली
फजा'ल –तहु दक-काऊ -व खर-रा मूसा स'ई'का
व बिमाज-जिकल-लज़'ई ज़'हरा अ'ला तूरी से-ना-अ
फाकल-लम-ता बिही अ'अब-दका व रसूलाका
मूसाबिना इ'म-रान
व बीत'अल-अतिका फी साए'एर
व ज़'उहूरिका फी जबाली फाराना बी-रबा व अतिल-मुक़द-
दासीना व जुनूदिल-माला-इकतीस-स'आआआ-फ-फीन
व खुसूई'L-माला-इकातिल-मुसाब-बिह'इन
व बी-बरकातिकल-लती बारक-ता फी
उम्मती मुह'अम्मदीन स'अल-लाल्लाहू अ'इलाय्ही व आ-
लिह
व बारक-ता ली-या'कूबा इस-रा-ईलिका फी उम्मती मूसा
अ'ले-हिमास-सलाम
व बारक-ता लिह'अबीबिका मुह'अम्मदीन स'अल-लाल्लाहू
अ'अलिही व आ-लिही फी इ'त-रतिही व द'उर-री-
यथि व उम्मातिः
अल्ल्लाहुम्मा व कमा गिब-ना अ'न ज़'आलिका व लम नाश-
हद-हु व आआआ-मन-ना बिही व लम नाराहू स'ईद-काऊ -
व अ'ज़-ला
अन तुस'अल-लिया अ'ला मुह'अम्मैव -व अन
तुबारिका अ'ला मुह'अम्मदीन-व आ-ली मुह'अम्मदीन
काफ-ज़"अली मा S'अल-लयता व बारक-ता व तरह'-ह'अम-
ता अ'ला इब-राहीमा व आ-ली इबराहीम
इन-नका ह'अमीदुम-मजीद
फा'आलुल-लीमा तुरीद
व अंत अ'ला कुल-ली शै-इन क़दीरून

अब अल्लाह से अपनी दुआ मांगिये और नीचे लिखी हुई दुआ पढ़ें

अल्लाहुमा बिह'अक-की हद'आद-दुआ'आआआ-इ
व बिह'अक-की हद'इहील-अस-मा-इल-लती ला या'-
लामू तफ-सीरहा व-ला ता-वीलाहा व -ला या'-लामू
बात'इन्हा व -ला ज़'आहिरहा गैरुक

اَلَّتِیْ وَقَعَتْ عَلٰی اَرْضِ مِصْرَ بِمَجْدِ الْعِزَّةِ وَ الْغَلَبَةِ
بِاٰیٰتٍ عَزِیْزَةٍ وَّ بِسُلْطَانِ الْقُوَّةِ وَ بِعِزَّةِ الْقُدْرَةِ وَ
بِشَاْنِ الْکَلِمَةِ التَّآمَّةِ وَ بِکَلِمَاتِكَ الَّتِیْ تَفَضَّلْتَ
بِهَا عَلٰی اَهْلِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَ اَهْلِ الدُّنْیَا وَ
اَهْلِ الْاٰخِرَةِ وَ بِرَحْمَتِكَ الَّتِیْ مَنَنْتَ بِهَا عَلٰی
جَمِیْعِ خَلْقِكَ وَ بِاسْتِطَاعَتِكَ الَّتِیْ اَقَمْتَ بِهَا عَلَی
الْعَالَمِیْنَ وَ بِنُوْرِكَ الَّذِیْ قَدْ خَرَّ مِنْ فَزَعِهٖ طُوْرُ
سَیْنَآءَ وَ بِعِلْمِكَ وَ جَلَالِكَ وَ کِبْرِیَآئِكَ وَ عِزَّتِكَ
وَ جَبَرُوْتِكَ الَّتِیْ لَمْ تَسْتَقِلَّهَا الْاَرْضُ وَ انْخَفَضَتْ
لَهَا السَّمٰوٰتُ وَ انْزَجَرَ لَهَا الْعُمْقُ الْاَکْبَرُ وَ رَکَدَتْ
لَهَا الْبِحَارُ وَ الْاَنْهَارُ وَ خَضَعَتْ لَهَا الْجِبَالُ وَ
سَکَنَتْ لَهَا الْاَرْضُ بِمَنَاکِبِهَا وَ اسْتَسْلَمَتْ لَهَا
الْخَلَآئِقُ کُلُّهَا وَ خَفَقَتْ لَهَا الرِّیَاحُ فِیْ جَرَیَانِهَا وَ
خَمَدَتْ لَهَا النِّیْرَانُ فِیْ اَوْطَانِهَا وَبِسُلْطَانِكَ الَّذِیْ
عُرِفَتْ لَكَ بِهِ الْغَلَبَةُ دَهْرَ الدُّهُوْرِ وَ حُمِدْتَ بِهٖ فِی
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِیْنَ وَ بِکَلِمَتِكَ کَلِمَةِ الصِّدْقِ
الَّتِیْ سَبَقَتْ لِاَبِیْنَا آدَمَ عَلَیْهِ السَّلَامُ وَ ذُرِّیَّتِهٖ
بِالرَّحْمَةِ وَ اَسْئَلُكَ بِکَلِمَتِكَ الَّتِیْ غَلَبَتْ کُلَّ

WWW.IslamInHindi.org

स’अल-ली अ’ला मुह’अम्मद व आ-ली मुह’अम्मद
व अन तर्ज़ुक़नी खाय्रद-दून-या व ल-आ-खिरह
व फ-अ’ल बी मा अंत अह-लुह
व -ला तफ-अ’ल बी आना अह-लुहू
व न-ताकिम ली मिन
व ग-फ़िर ली मिन ज़’उनूबी मा तकाद-
दम मिन्हा व मा ताख-हरा व ली-व अलिदय-या व ली-
जमीई’ल-मु-मिनीना व ल-मु-मिनात
व व स-सिया’ अ’ले-या मिन ह’अलाली रिज्किक
व व स-सिया अ’ले-या मिन ह’अलाली रिज्किक
व क-फ़िनी मूनाता इन-सानी सौ-इव-व सुल-तानी सौ -इव-
व क़रीनी सव-इव-व यव-मी सव-इव-व सा’ती सौ-इन
व न-ताकिम ली मिम्मय-यकीदुनी व मिम्मय-यब-
घी अ’ले या व युरीद बी व बी-अह-ली व औ-लाज़ी व ईख-
व अनी व जीरानी व क़राबाती मिनल-मु-मिनीना व ल-मु-
मिनाति ज़’उल-मा
इन-नका अ’ला मा तशा-उ क़दीर
व बिकुल-ली शय-इन अ’लीम
आ-मीन रब- बल-अ’अलामीन
अल्लाहुमा बिह’अक-की हद’आद-दुआ’आआआ-इ तफज़”-ज़” अल
अ’ला फुक़रा-इल-मुमिनीना व ल-मुय्मिनाती बिल-गिना व थ-थर-व ह
व अ’ला मर-ज़”आल –मु-मिनाति बिष-शिफा-
इ व स’सिह’ह’अह
व अ’ला अह’या-इल-मुमिनीना व ल-करामः
व अ’ला अम-व अतिल-मु-मिनाति बिल-मग़-फिरती व र-रह’-माह
व अ’ला मुसाफिरील-मुमिनीना व ल-मु-मिनाति बीर-रज-
ज़ि इला औ-त’आनिहीम सालिमीना गानिमींन
बी-रह’-मतिका या अर-ह’अमर-राह’इमें
व स’अल-लाल्लाहू अ’ला से-
यिदिना मुह’अम्मदीन खातामिन-नबी-ईन व इ’त-रतिहित-
ताहिरीना व सल-लमा तस-लीमन कसीरा

شَيْءٍ وَّ بِنُوْرِ وَجْهِكَ الَّذِيْ تَجَلَّيْتَ بِهٖ لِلْجَبَلِ
فَجَعَلْتَهٗ دَكًّا وَّ خَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا وَ بِمَجْدِكَ الَّذِيْ
ظَهَرَ عَلٰى طُوْرِ سَيْنَآءَ فَكَلَّمْتَ بِهٖ عَبْدَكَ وَ
رَسُوْلَكَ مُوْسَى ابْنَ عِمْرَانَ وَ بِطَلْعَتِكَ فِيْ سَاعِيْرَ
وَ ظُهُوْرِكَ فِيْ جَبَلِ فَارَانَ بِرَبَوَاتِ الْمُقَدَّسِيْنَ وَ
جُنُوْدِ الْمَلٰٓئِكَةِ الصَّافِّيْنَ وَ خُشُوْعِ الْمَلٰٓئِكَةِ
الْمُسَبِّحِيْنَ بِبَرَكَاتِكَ الَّتِيْ بَارَكْتَ فِيْهَا عَلٰى
اِبْرَاهِيْمَ خَلِيْلِكَ عَلَيْهِ السَّلَامُ فِيْ اُمَّةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى
اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَ بَارَكْتَ لِاِسْحَاقَ صَفِيِّكَ فِيْ اُمَّةِ
عِيْسٰى عَلَيْهِمَا السَّلَامُ وَ بَارَكْتَ لِيَعْقُوْبَ
اِسْرَائِيْلِكَ فِيْ اُمَّةِ مُوْسٰى عَلَيْهِمَا السَّلَامُ وَ بَارَكْتَ
لِحَبِيْبِكَ مُحَمَّدٍ صَلَّ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ فِيْ عِتْرَتِهٖ وَ
ذُرِّيَّتِهٖ وَ اُمَّتِهٖ اَللّٰهُمَّ وَ كَمَا غِبْنَا عَنْ ذٰلِكَ وَ لَمْ
نَشْهَدْهُ وَ اٰمَنَّا بِهٖ وَ لَمْ نَرَهٗ صِدْقًا وَّ عَدْلاً اَنْ تُصَلِّيَ
عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ اَنْ تُبَارِكَ عَلٰى مُحَمَّدٍ
وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ تَرَحَّمَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ
كَاَفْضَلِ مَا صَلَّيْتَ وَ بَارَكْتَ وَ تَرَحَّمْتَ عَلٰى
اِبْرَاهِيْمَ وَ اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ فَعَّالٌ لِّمَا

WWW.IslamInHindi.org

تُرِيْدُ وَ اَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

और अपनी जाएज़ दुआ मांगिये और पढ़िए

اَللّٰهُمَّ بِحَقِّ هٰذَا الدُّعَآءِ وَ بِحَقِّ هٰذِهِ الْاَسْمَآءِ الَّتِيْ لاَ يَعْلَمُ تَفْسِيْرَهَا وَ لاَ يَعْلَمُ بَاطِنَهَا غَيْرُكَ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّ افْعَلْ بِيْ مَا اَنْتَ اَهْلُهٗ وَلاَ تَفْعَلْ بِيْ مَا اَنَا اَهْلُهٗ وَ اغْفِرْ لِيْ مِنْ ذُنُوْبِيْ مَا تَقَدَّمَ مِنْهَا وَمَا تَاَخَّرَ وَ وَسِّعْ عَلَيَّ مِنْ حَلاَلِ رِزْقِكَ وَ اكْفِنِيْ مَؤُنَةَ اِنْسَانِ سَوْءٍ وَّ جَارِ سَوْءٍ وَّ قَرِيْنِ سَوْءٍ وَّ سُلْطَانِ سَوْءٍ اِنَّكَ عَلٰى مَا تَشَآءُ قَدِيْرٌ وَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ اٰمِيْنَ رَبَّ الْعَالَمِيْنَ۔

और अपनी जाएज़ दुआ मांगिये और पढ़िए

يَا اَللّٰهُ يَا حَنَّانُ يَا مَنَّانُ يَا بَدِيْعَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ يَا ذَا الْجَلاَلِ وَ الْاِكْرَامِ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ۔ اَللّٰهُمَّ بِحَقِّ هٰذَا الدُّعَآءِ وَ بِحَقِّ هٰذِهِ الْاَسْمَآءِ الَّتِيْ لاَ يَعْلَمُ تَفْسِيْرَهَا وَ لاَ تَاْوِيْلَهَا وَلاَ بَاطِنَهَا وَ لاَ ظَاهِرَهَا غَيْرُكَ اَنْ تُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِ مُحَمَّدٍ وَ اَنْ تَرْزُقَنِيْ خَيْرَ الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ۔

और अपनी जाएज़ दुआ मांगिये और पढ़िए

وَ افْعَلْ بِيْ مَا اَنْتَ اَهْلُهٗ وَ لاَ تَفْعَلْ بِيْ مَا اَنَا اَهْلُهٗ وَ

WWW.IslamInHindi.org

انْتَقِمْ لِيْ مِنْ فُلَانِ بْنِ فُلَانٍ (اَعْدَاءِ آلِ مُحَمَّدٍ) وَ
اغْفِرْ لِيْ مِنْ ذُنُوْبِيْ مَا تَقَدَّمَ مِنْهَا وَ مَا تَاَخَّرَ وَ
لِوَالِدَيَّ وَ لِجَمِيْعِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ وَ وَسِّعْ
عَلَيَّ مِنْ حَلَالِ رِزْقِكَ وَ اكْفِنِيْ مَؤُنَةَ اِنْسَانِ سَوْءٍ
وَّ جَارِ سَوْءٍ وَّسُلْطَانِ سَوْءٍ وَّ قَرِيْنِ سَوْءٍ وَّ يَوْمِ
سَوْءٍ وَّ سَاعَةِ سَوْءٍ وَ انْتَقِمْ لِيْ مِمَّنْ يَكِيْدُنِيْ وَ
مِمَّنْ يَبْغِيْ عَلَيَّ وَ يُرِيْدُ بِيْ وَ بِاَهْلِيْ وَ اَوْلَادِيْ وَ
اِخْوَانِيْ وَ جِيْرَانِيْ وَ قَرَابَاتِيْ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ
الْمُؤْمِنَاتِ ظُلْمًا اِنَّكَ عَلٰى مَا تَشَآءُ قَدِيْرٌ وَّ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيْمٌ اٰمِيْنَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ـ اَللّٰهُمَّ بِحَقِّ هٰذَا
الدُّعَآءِ تَفَضَّلْ عَلٰى فُقَرَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ
بِالْغِنٰى وَ الثَّرْوَةِ وَ عَلٰى مَرْضَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَ
الْمُؤْمِنِيْنَ بِالشِّفَآءِ وَ الصِّحَّةِ وَ عَلٰى اَحْيَآءِ
الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ بِاللُّطْفِ وَ الْكَرَامَةِ وَ عَلٰى
اَمْوَاتِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ بِالْمَغْفِرَةِ وَ الرَّحْمَةِ
وَ عَلٰى مُسَافِرِى الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ بِالرَّدِّ اِلٰى
اَوْطَانِهِمْ سَالِمِيْنَ غَانِمِيْنَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ
الرَّاحِمِيْنَ وَ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ خَاتَمِ

WWW.IslamInHindi.org

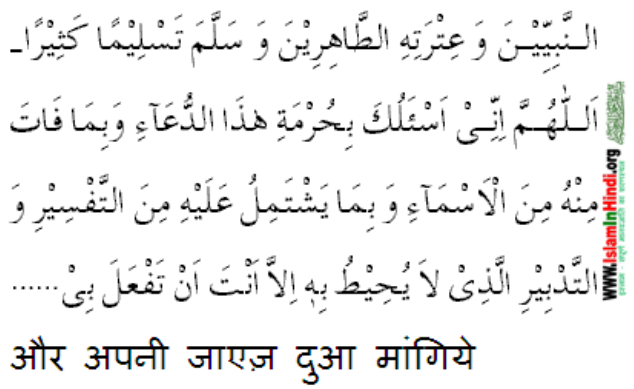

हिन्दी अनुवाद

ऐ माबूद मै तेरे अज़ीम बड़ी अज़मत वाले, बड़ी रौशन बड़ी इज्ज़त वाले नाम के ज़रिये सवाल करता हूँ के जब आसमान के बंद दरवाज़े रहमत के लिए खोलने के लिए तुझे इस नाम से पुकारें तो वोह खुल जाते हैं, और जब ज़मी के तंग रास्ते खोलने के लिए तुझे इस नाम से पुकारा जाए तो वोह कुशादा हो जाते हैं और जब सख्ती के वक़्त आसानी के लिए इस नाम से पुकारें तो आसानी हो जाती है और जब मुर्दों को उठाने के लिए युझे इस नाम से पुकारें तो वोह उठ खड़े होते हैं और तंगियाँ और सख्तियाँ दूर करने के लिए तुझे इस नाम से पुकारें तो वोह दूर हो जाती हैं और सवाली हूँ तेरी ज़ात करीम के जलाल के ज़रिये जो सब से बुज़ुर्ग ज़ात है सब से मो-अज़ज़ ज़ात है के जिस के आगे चेहरे झुकते हैं इसके सामने गर्दनें ख़म होती हैं, इसके हुज़ूर आवाजें कांपती हैं और जिसके खौफ से दिलों में लरज़ा तारी हो जाता है और सवाल करता हूँ तेरी इस कुवत के ज़रिये जिस से तुने आसमान को ज़मीन पर गिरने से रोक रखा है मगर जब तू इसे हुकुम दे और इस आसमान और ज़मीन को रोका हुआ है के खिसक न जाए और तेरी इस मशियत के ज़रिये सवाली हूँ, आलामीन जिस के मती-अ हैं तेरे इन कलमात के वास्ते से सवाली हूँ जिन से तुने अस्स्मानो और ज़मीन को पैदा किया तेरी इस हिकमत के वास्ते से जिस से तुने अजाएब को बनाया और जिस से तुने तारीकी को खलक किया और इसे रात करार दिया और इसे आराम के लिए ख़ास किया और अपनी हिकमत से तुने रोशनी पैदा की और इसे दिन का नाम दिया और दिन को जाग उठने और देखने के लिए बनाया और तुने इस से सूरज को पैदा किया और सूरज को रौशन किया, तुने इस से चाँद को पैदा किया और चाँद को चमकदार बनाया और तुने इस से सितारों को पैदा किया, इन्हें फरोजां किया, इन के बुर्ज बनाए और इन्हें चिराग बनाया और जीनत बनाया, संग्बार बनाया, तुने इन के लिए मशरिक और मगरिब बनाए, तुने इन के चमकने और चलने की राहें बनायीं, तुने इन के लिए फलक और सैर की जगह बनायी और आसमान में इन की मंजिलें मुक़र्रर कीं, पस तुने इन का बेहतरीन अंदाजा ठहराया

और तुने इन्हें शकल अता किया, किया ही अच्छी शकल दी और इन्हें अपने नामों के साथ पूरी तरह शुमार किया और अपनी हिकमत से इनका एक निजाम क़ाएम किया, और खूब तदबीर फरमाई और रात के अरसे और दिन की मुद्द्त के लिए मती-अ बनाया और सा-अतों और सालों के हिसाब का ज़रिया बनाया और सब लोगों के लिए इन को देखना यकसां कर दिया, और सवाल करता हूँ तुझ से ऐ अल्लाह तेरी उस बुज़ुर्गी के ज़रिये जिस से तुने अपने बन्दे और रसूल हज़रत मूसा (अस) से कलाम फरमाया, पाक लोगों में जो फरिश्तों की समझ से बाला है, बादलों से बुलंद ताबूत शहादत से ऊंचा, जो आग के सतून में तूर के सीना में कोहे हुरैस में, वादिये मुक़द्दस में, बरकत वाली ज़मी में, तूर-ए ऐमन की तरफ, एक दरख़्त से जो सर ज़मीन-ए-मिस्र में पैदा हुआ सवाल करता हूँ नौ रोशन मोएज्जों के वास्ते से सुर इस दिन के वास्ते से के जिस दिन तुने बनी इस्राइल के लिए दरया में रास्ता बनाया और इन चश्मों में जो पत्थर से जारी हुए के जिन के ज़रिये तुने अजीब मोएज़्ज़ात को दरया-ए-सूफ में ज़ाहिर किया!और तुने दरया के पानी तो भंवर के दरम्यान पत्थरों की मानिंद जकड़ के रख दिया और तुने बनी इस्राइल को दरया से गुज़ार दिया और इन के बारे में तेरा बेहतरीन दावा पूरा हुआ जब इन्हों ने सब्र किया और तुने इनको ज़मीन के मश्रीको-मगरिब का मालिक बनाया जिन में तुने आलामीन के लिए बरकतें रखीं हैं और तुने फिरौन और इसके लश्कर को, इन की सवारियों को दरिया-ए-नील में गर्क कर दिया और सवाली हूँ ब-वास्ता तेरे नाम के जो बुलंद-तर इज्ज़त वाला रौशन बुज़ुर्गी वाला है, और ब-वास्ता तेरी शान के जो तुने अपने कलीम मूसा (अस) के लिए चाहे शीई में ज़ाहिर की और अपने महबूब याकूब (अस) के लिए बैत-ए-इल में ज़ाहिर की, और तुने इब्राहीम (अस) से अपने अहद व पैमान पूरा किया और इस्हाक़ (अस) के लिए अपनी क़सम पूरी की और याकूब (अस) के लिए अपनी शहादत ज़ाहिर की और मोमिनीन से अपने वादा वफ़ा किया और जिन्हों ने तेरे नामों के ज़रिये दुआएं कीं इन्हें कबूल किया और सवाली हूँ ब वास्ता तेरी शान के जो कूब-बाये रमान पर मूसा इब्न इमरान (अस) के लिए ज़ाहिर हुई और ब वास्ता तेरे मोएज़्ज़ों के जो मुल्के मिस्र में तेरी शान और इज्ज़त और ग़लबा से इज्ज़त वाली निशानोयों से ग़ालिब कुवत से कुदरत कु बुलंदी और पूरा होने वाले कौल की शान से रोनूमा हुए और तेरे इन कलमात से जिन के ज़रिये तुने आसमान और ज़मीन के रहने वालों और अहले दुनिया और अहले आखेरत पर एहसान किया, और सवाली हूँ तेरी इस रहमत के ज़रिये जिस से तुने अपनी सारी मखलूक पर करम किया, सवाली हूँ तेरी इस तवानाई के वास्ते से जिस से तुने अहले आलम को क़ाएम रखा, सवाली हूँ ब वास्ता तेरे उस नूर के जिस के खौफ से तूरे सीना चकना चूर हुआ, सवाली हूँ तेरे इस आलम व जलालत और तेरी बड़ाई और इज्ज़त और तेरे जब्रोत के वास्ते से जिस को ज़मीन बर्दाश्त न कर सकी और आसमान आजिज़ हो गए और इस से ज़मीन की गहराइयां कपकपा गयीं, जिस के आगे समंदर और नहरें रुक गयीं, पहाड़ इस के लिए झुक गए, और ज़मीन इसके लिए अपने सतूनों पर ठहर गयी, और इसके सामने सारी मखलूक सर-न्गुं हो गयी, अपने रू-ओं पर चलती हवाएं इसके सामने परेशान हो गयीं, इस के लिए आग अपने मक़ाम पर बुझ गयी, सवाली हूँ ब वास्ता तेरी उस हुकूमत के जिस के ज़रिये हमेशा हमेशा तेरे ग़लबे की पहचान होती है, और आसमानों और ज़मीनों में इस से तेरी हम्द होती है, सवाली हूँ ब वास्ता

तेरे इस सच्चे कौल के जो तुने हमारे बाप आदम (अस) और इनकी औलाद के लिए रहमत के साथ फरमाया है, सवाली हूँ ब वास्ता तेरे इस कलमा के जो तमाम चीज़ों पर ग़ालिब है, सवाली हूँ ब वास्ता तेरी ज़ात के इस नूर के जिस का जलवा तुने पहाड़ पर ज़ाहिर किया तो वो टुकड़े टुकड़े हो गया और मूसा (अस) बेहोश होकर गिर पड़े, सवाली हूँ ब वास्ता तेरे इस बुज़ुर्गी के जो सीना-ए तूर पर ज़ाहिर हुई तो तुने अपने बन्दे और अपने रसूल मूसा (अस) बिन इमरान से हमकलाम हुआ सवाली हूँ तेरी नुरानियत के ज़रिये जनाब इसा (अस) की मुनाजात की जगह में और तेरे नूर के ज़हूर के ज़रिये कोहे फार इन में बुलंद व मुक़द्दस मक़ामात में सफें बांधे हुए मलाइका की फ़ौज के ज़रिये और तस्बीह ख्वान मलाइका के ख़ुशू-अ के ज़रिये सवाल करता हूँ ब वास्ता तेरी इन बरकात के ज़रिये जिन से तुने बरकत अता की अपने खलील इब्राहीन (अस) को हज़रत मुहम्मद (सअवव) की उम्मत में बरकत दी और अपने बर्गाजीदः इस्हाक़ (अस) को हज़रत ईसा (अस) की उम्मत में बरकत दी, और बरकत दी तुने अपने ख़ास बन्दे याकूब (अस) को हज़रत मूसा (अस) की उम्मत में और बरकत दी तुने अपने हबीब हज़रत मुहम्मद (सअवव) को इन की इतरत, ज़ुर्रियत, और इन की उम्मत में खुदाया जैसा के हम इन के अहद में मौजूद न थे और हमने इन्हें देखा नहीं और इन पर सच्चाई और हक्कानियत के साथ और दुरुस्ती से ईमान लाये, हम चाहते हैं की मुहम्मद और आले मुहम्मद पर रहमत फर्मा और मुहम्मद और आले मुहम्मद पर बरकत नाज़िल फर्मा और मुहम्मद और आले मुहम्मद पर शफ़क़त फर्मा जिस तरह तुने बेहतरीन रहमत और बरकत और शफ़क़त इब्राहीम और आले इब्राहीम पर फरमाई थी, बेशक तू हम्द और शान वाला है जो चाहे सो करने वाला है और तू हर चीज़ पर कुदरत रखता है

अब अपनी हाजत ब्यान कीजिये और कहिये :

ऐ माबूद! इस दुआ के वास्ते से के जिन की तफसीर तेरे सिवा कोई नहीं जानता और जिन की हकीकत से सिवाए तेरे कोई आगाह नहीं तो मुहम्मद और आले मुहम्मद पर रहमत फर्मा और मुझे से वोह सुलूक कर जो तेरे शायाने शान है, न की वो सुलूक जिसका मै मुस्तहक हूँ और मेरे गुनाहों में से जो मै ने पहले किये और जो बाद में, बख्श दे और अपना रिज्क़ हलाल मेरे लिए कुशादः कर दे और मुझे बुरे इंसान बुरे हमसाये बुरे साथी और बुरे हाकिम की अज़ीयत से बचाए रख बेशक तू जो चाहे वो करने पर कादिर है और हर चीज़ का इल्म रखता है, आमीन या रब्बुल आलामीन!

मो'अल्लिफ कहते हैं के बाज़ नुस्खों में यूं आया है : इस्ले बाद जो हाजत हो इसका ज़िक्र करें और कहें : और तू हर चीज़ पर कुदरत रखता है! ऐ अल्लाह, ऐ मुहब्बत करने वाले, ऐ एहसान करने वाले, ऐ आसमान और ज़मीन के इजाद करने वाले, ऐ जलालत और बुजर्गी वाले, ऐ सब से ज़्यादा रहम करने वाले, ऐ माबूद, इस दुआ के वास्ते से और इन नामों के वास्ते से की जिन की

और अल्लामा मजलिसी (अलैहिर रहमा) ने मिस्बाहे सय्यद बिन बाक़ी (अलैहिर रहमा) से नक़ल किया है की दुआ सीमात के बाद यह दुआ पढ़ें

तफसीर और तावील और जिन के बातिन व ज़ाहिर को सिवाए तेरे कोई नहीं जानता तो मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत फर्मा और मुझे दुनिया और आखेरत की भलाई अता फर्मा!

अब हाजत तलब करें और कहें :

और मुझ से वो सुलूक कर जो तेरे शायाने शान है न की वो सुलूक जिसका मै मुस्तहक हूँ और मेरी तरफ से फलां बिन फलां से बदला ले

फलां बिन बिन फलां की जगह अपने दुश्मन का नाम ले, और कहें :

और मेरे गुजीशता और आइन्दा तमाम गुनाहों को माफ़ फर्मा और मेरे मा बाप और सारे मोमिनीन और मोमिनात के गुनाह बख्श दे और अपना रिज्क़ हलाल मेरे लिए कुशादः कर दे और मुझ को बुरे इंसान बुरे हमसाये बुरे हाकिम बुरे साथी बुरे दिन बुरे वक़्त की अज़ीयत से बचाए रख और मेरी तरफ से बदला ले ले इस से जिस ने मुझे धोका दिया और जिस ने मुझ पर ज़ुल्म किया और जो ज़ुल्म का इरादा रखता है, मेरे अहल मेरे औलाद मेरे भाईओं और मेरे हमसायों के लिए जो मोमिनीन और मोमिनात में से हैं इस से इन्तेकाम ले, बे शक तू जो कुछ कुदरत रखता है और हर चीज़ से वाकिफ है, आमीन ऐ रब्बुल आलमीन, ऐ माबूद इस दुआ के वास्ते से ग़रीब मोमिनीन और मोमिनात को माल व मत्ता-अ अता फर्मा, बीमार मोमिनीन और मोमिनात को तंदुरुस्ती और सेहत अता फर्मा, और ज़िंदा मोमिनीन और मोमिनात पर लुत्फ़ व करम फर्मा और मुर्दा मोमिनीन और मोमिनात पर बख्शीश और रहमत फर्मा, और मुसाफिर मोमिनीन और मोमिनात को सलामती व रिज्क़ के साथ घरों में वापस ला, अपनी रहमत से ऐ सब से ज़्यादा रहम करने वाले और हमारे सरदार नबियों के खातिम हज़रत मुहम्मद पर रहमते खुदा हो और इन की पाकीजः औलाद पर और सलाम हो, बहुत ज़्यादा सलाम!

शेख इब्न फहद ने फरमाया है की मुस्तहब यह है की दुआए सीमात के बाद कहें :

ऐ माबूद मै सवाल करता हूँ ब-वास्ता इस दुआ की हुरमत के और इन नामों के ज़रिये जो इस में मजकूर नहीं और इस तफसीर व तदबीर के वास्ते से सवाल करता हूँ जिस का सिवाए तेरे कोई अहाता नहीं कर सकता की तू मेरे लिए ऐसा और ऐसा कर (ऐसा और ऐसा की जगह पर अपनी हाजत तलब करे)

अल्लाहुमा सल्ले अला मुहम्मदीन व आले मुहम्मद